समझ किसे कहते हैं?

कक्षा में मास्टर जी पढ़ाते हुए जब पूछते हैं **"समझ में आया?"** तब कुछ बच्चे एकदम से हाथ उठाकर बोल पड़ते हैं - **"हाँ"**। यानी कही बात उन्हें समझ में आ गई। और जो कुछ नहीं बोलते हैं उनके बारे में कह सकते हैं कि उन्हें बात समझ में नहीं आई।

अमिताश ओझा

हम लोग जीवन में बहुत कुछ समझते हैं या समझने की कोशिश करते हैं। कुछ चीज़ों को समझने के लिए हमें काफी मशक्कत करनी पड़ती है जैसे गणित के सूत्र अथवा रसायनशास्त्र में तत्वों के नाम। पर एक ऐसी चीज़ है जिसे हम बिना किसी खास मेहनत के समझ लेते हैं और वह है भाषा। हम दिन भर बोलते हैं। लोगों को बोलते हुए देखते हैं। उनकी बातों को सुनते हैं, समझते हैं। कितना सरल लगता है भाषा को समझना! हम बचपन से उस भाषा को बोलते आए हैं इसलिए हमें खास मेहनत नहीं करनी पड़ती। लेकिन किसी नई भाषा को देखो, बिलकुल समझ में नहीं आएगी। उस भाषा के शब्द सिर्फ ध्वनियाँ लगेंगे जिनका कोई अर्थ नहीं होगा। उसकी लिखावट ऐसी होगी मानो किसी ने कागज़ पर यूँ ही कुछ निशान बना दिए हों। पर, वास्तव में ऐसा है नहीं। वह नई भाषा किसी न किसी को तो समझ में आती ही होगी। जिस प्रदेश अथवा देश में बोली जाती है वो वहाँ के लोग उसे आसानी से समझ लेते होंगे।

चलो, हम एक और सवाल करते हैं – "समझना किस कहते हैं?" चूँकि सवाल दार्शनिक है इसका एक जवाब तो हो ही नहीं सकता। अलग-अलग समय पर अलग-अलग लोगों ने अपनी-अपनी राय दी हैं। हमारी कोशिश होगी कि हम लोगों की राय जानें और अपनी एक राय बनाएँ। यहाँ हम अपने सवाल का दायरा थोड़ा छोटा रखते हुए बस इतना ही पूछते हैं कि "भाषा की समझ क्या होती है?"

मान लो, हम खाना खाने बैठे हों और कोई हमसे कहता है "पानी का गिलास पकड़ाना।" आम तौर पर ऐसे में हम चुपचाप नहीं बैठे रहते। यदि हम बैठे रहे तो लगेगा जैसे हमें उसकी बात समझ में नहीं आई और हो सकता है कि समझ में आई हो फिर भी हमने गिलास नहीं पकड़ाया। ऐसे में दो बातें सामने आती हैं। एक तो सिर्फ शब्दों को समझना और दूसरा समझकर उस पर अमल करना। यदि हम सिर्फ समझकर शान्त हो जाएँ तो सामने वाले को पता ही नहीं चलेगा कि हमें उनकी बात समझ में आई है। यानी भाषा की समझ सिर्फ शब्दों के अर्थ तक सीमित नहीं है बल्कि उनको अमल में लाना भी एक तत्व है। पर, हम सारी बातों को तो अमल में नहीं लाते हैं?

चलो, कुछ साल पहले किए गए एक प्रयोग पर नज़र डालते हैं। कुछ वैज्ञानिक बन्दरों के दिमाग पर शोध कर रहे थे। वे बन्दरों से कोई गतिविधि करवाते और यह देखने की कोशिश करते कि उनके दिमाग का कौन-सा हिस्सा उस क्रियाकलाप के लिए ज़िम्मेदार है। इस तरह के प्रयोगों को ब्रेन मैपिंग कहते हैं। उन्होंने बन्दरों को एक गिलास उठाने के लिए प्रशिक्षित किया। जब बन्दर गिलास उठाता तो उसके दिमाग के एक हिस्से में गतिविधि होती। यहाँ तक तो प्रयोग बड़ा सफल रहा लेकिन इस प्रयोग में रोमांचक मोड़ तब आया जब उन्होंने अचानक देखा कि जब कोई बन्दर किसी दूसरे बन्दर को गिलास उठाते हुए देखता है तब भी दिमाग का वही हिस्सा क्रियाशील होता है। यानी काम चाहे खुद करो या किसी और को वही काम करते देखो। बराबर।

कुछ वैज्ञानिकों ने यही प्रयोग मनुष्यों पर दोहराया और पाया कि हमारा दिमाग भी इसी प्रकार क्रियाशील होता है। जब हम गिलास उठाते हैं या किसी और को उठाते हुए देखते हैं या इस प्रकार का सन्देश भाषा के रूप में सुनते हैं – तीनों ही स्थितियों में हमारे दिमाग में सामान गतिविधि होती है।

इस प्रयोग से कई निष्कर्ष निकाले जा सकते हैं। इनमें एक प्रमुख यह है कि हमारी समझ सिर्फ शब्दों के अर्थ तक सीमित नहीं है बल्कि जब भी हम किसी शब्द को समझते हैं तो हम उसके साथ की जा सकने वाली गतिविधि की सम्भावना भी सोचते हैं। यह अलग बात है कि हम हर बात पर प्रतिक्रिया नहीं करते। यह हमारे पुराने अनुभवों का प्रभाव होता है।

कैलिफोर्निया विश्वविद्यालय के प्रोफेसर सर्ल ने इसी सवाल को एक दूसरे ढंग से पूछा था। उनका प्रश्न था कि हम भी गणित के सवाल हल करते हैं और कम्प्यूटर भी, किन्तु क्या कम्प्यूटर अपने हल किए गए सवालों को समझता है जिस प्रकार हम समझते हैं?

क्या कम्प्यूटर अपने हल किए गए सवालों को समझता है जिस प्रकार हम समझते हैं।

चित्र : दिलीप चिंचालकर

एक प्रयोग के द्वारा उन्होंने यह बतलाने की कोशिश की कि कम्प्यूटर भले ही सांकेतिक भाषा का प्रयोग करता हो या गणित के प्रश्नों को हल करता हो पर वह मनुष्यों की तरह उन्हें समझता नहीं है। समझना एक अनुभव है जो कम्प्यूटर महसूस नहीं कर सकता।

उनका विश्वविख्यात चाइनीज़ रूम प्रयोग बड़ा रोचक है। उन्होंने कहा कि मान लो, किसी कमरे में एक ऐसे व्यक्ति को बन्द कर दिया जाए जिसे चीनी भाषा नहीं आती हो। अगर थोड़ी देर बाद उसके कमरे में एक कागज़ भेजा जाए जिसमें कुछ संकेत लिखे हों और समझाया गया हो कि किसी संकेत के बदले में उसे क्या संकेत लिखना है (ये संकेत चीनी भाषा की लिपि में थे)। थोड़ी देर में उसे फिर से एक पत्र प्राप्त हो जिसमें कुछ चीनी संकेत अंकित हों। इस पत्र को हल करने के लिए उसके पास पहले के दिशा-निर्देश उपलब्ध हैं। इनकी मदद से वह इन संकेतों के बदले में कुछ और संकेत लिख सकता है। कुछ समय बाद वह उन संकेतों के बदले कुछ और संकेत लिखकर बाहर भेज देता है। बाहर बैठा व्यक्ति जिसे चीनी भाषा आती है वह उन्हें पढ़ता है और उसे वे संकेत प्रश्नों के सटीक उत्तर लगते हैं।

इस प्रयोग में प्रोफेसर सर्ल का सवाल था कि क्या अन्दर बैठे आदमी को कुछ समझ में आया कि उसने क्या किया? उसने तो सिर्फ संकेतों का आदान-प्रदान दिशा-निर्देशों के अनुसार किया। उसके लिए वे प्रश्न और उत्तर नहीं थे। सिर्फ कुछ संकेत थे जिन्हें वह नहीं समझता था। लेकिन बाहर बैठे आदमी के लिए वह सिर्फ संकेत नहीं थे, वे प्रश्न और उत्तर थे। उनका कहना था कि बाहर बैठे आदमी को भाषा समझने की अनुभूति हुई जबकि अन्दर वाले व्यक्ति को ऐसा कुछ महसूस न हुआ। कम्प्युटर सिर्फ संकेतों का आदान-प्रदान करते हैं इसलिए हम यह नहीं कह सकते कि उन्हें कुछ समझ में आया। उनके अनुसार समझना एक मानवीय अनुभूति है।

चलो, अब तुम अपनी कोई राय बनाओ और सोचो कि आखिर समझने का मतलब होता क्या है?